E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

जनजातीय पोशाक का आधुनिकरण एक विश्लेषण

' [1]डॉ. प्रियंका येशीकर, [2]डॉ. प्रकाश सोलंकी

[1]अतिथि विद्वान, माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय इंदौर

[2]सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय सीतामऊ जिला मंदसौर

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.13372018

शोध सारांश :

भारतीय फैशन को नया लुक देने के लिए पारंपरिक पहनावे को नए रूपों में प्रस्तुत किए जाने का प्रयास किया गया है। क्योंकि फैशन के नए लुक में जनजातीय पोशाक को भी अधिक पसंद किया जाने लगा है। जो एक तरफ से जनजातीय पोशाक का आधुनिकरण परिलक्षित होता है। शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के चलते उच्च शिक्षित किशोरियों एवं युवातीयां भी अपने पहनावे को मिश्रित रूप से प्रस्तुत कर रही है।

शब्द कुंजी : पोशाक, जनजाति,आधुनिकीकरण , फैशन, उच्च शिक्षा आदि

1. प्रस्तावना :

पोशाक मात्रा शरीर को ढकने के लिए नहीं होते हैं बल्कि यहां मौसम की मार से बचाती है पोशाक से मनुष्य की हैसियत पद तथा समाज में उसके स्थान का पता चलता है। पोशाक मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारती है जब हम किसी से मिलते हैं तो पहले उसकी पोशाक से प्रभावित होते हैं।

जनजातियों के परिधान परंपरागत है यह स्वयं वस्त्र का निर्माण करते हैं कपास की खेती की जाती है पलाश के फूलों से लाल रंग बनाया जाता है इनका कपड़ा स्वनिर्मित होने के कारण मोटा होता है महिलाएं लाल रंग की किनारी वाली साड़ी पहनती है जिसे पठिया कहा जाता है इसका आंचल चौड़ा है और कलात्मक होता है। पुरुषों के परिधान जैसे गमछा आदि में भी लाल किनारी होती है बहुत पहले जब यह जंगलों में रहते थे तब पुरुषों का आधो वस्त्र बहुत छोटा होता था केवल आगे और पीछे के भाग ढकने के लिए बनाए जाने वाले इस वस्त्र को तोलोंग कहते थे। आधुनिक युग में अब यह वस्त्र रीति–रिवाजिया परंपरागत विधान के समय ही पहने जाते हैं युग बदलने और शिक्षा के प्रचार प्रसार के साथ अब जनजातीय ने भी मुख्य धारा के अनुकूल के वस्त्र धारण करके अपने समाज को विकासशील बना लिया है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

2. उद्देश्य :

1. वर्तमान में जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने की स्थिति।
2. पारंपरिक समारोह में शामिल होने की स्थिति।
3. जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने का सह सहसंबंधात्मक की स्थिति।

3. विधि :

काई वर्ग की मानक तालिका : काई वर्ग की मानक तालिका के साथ वास्तविक परिणाम की तुलना की गई है जिसमें सामान्य रूप से 0.05 के साथ अर्थात 5: स्तर पर मानक मूल्य से तुलना करते हुए सार्थकता ज्ञात की गई है यदि मानक मूल्य से वास्तविक परिणाम काम आता है तो सार्थकता का अभाव होता है तथा मानक मूल्य से वास्तविक परिणाम अधिक आता है तो सार्थकता की उपस्थिति होती है इस प्रकार प्राथमिक समंकों का परीक्षण किया गया है।

जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण:

भारतीय फैशन को नया लूक देने के लिये पारम्परिक पहनावे को नये रूपों में प्रस्तुत किये जाने का प्रयास किया गया है। चूँकि फैशन के नये लूक में जनजाति पोशाक को भी अधिक पसंद किया जाने लगा है। जो एक तरह से जनजातीय पोशाक का आधुनिकी करण परिलक्षित होता है। शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के चलते उच्चशिक्षित किशोरियाँ, एवं युवतियाँ भी अपने पहनावे को मिश्रित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जनजाति पोशाक को आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने की विवेचना तालिका क्रमांक 4.40 में स्पष्ट किया गया है –

तलिका क्रमांक 1

वर्तमान में जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने की स्थिति

स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	103	34.33
नही	132	44.00
कोई उत्तर नही	65	21.67
कुल	300	100.00

स्रोत– प्राथमिक समंक $df = 2$ का 5 प्रतिषत स्तर पर

$\chi^2 = 5.99 < 7.53$ सार्थकता अतः परिणामों में निर्भरता है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनजाति पोशाक को आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने की दृष्टि से 34.33 प्रतिशत के अनुसार आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलता है तथा 44.00 प्रतिशत के अनुसार आधुनिकीकरण में बढ़ावा नही मिलता है। जबकि 21.67 प्रतिशत ने कोई उत्तर नही दिया।

रेखाचित्र क्रमांक 1

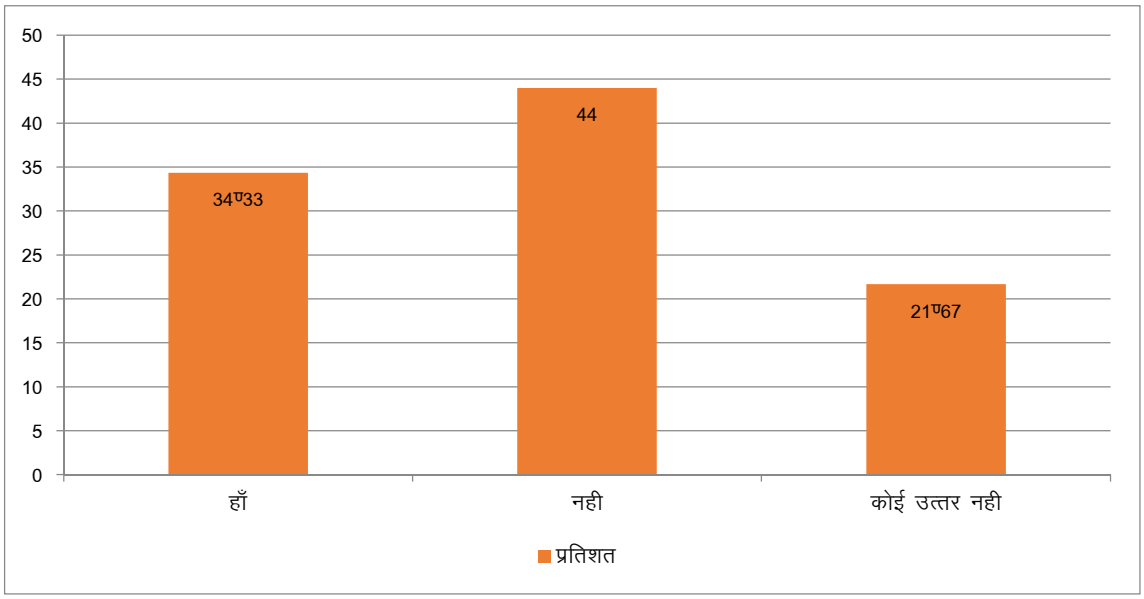

वर्तमान में जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने की स्थिति:

अध्ययन में पाया गया है कि फैशन के बदलते परिवेश में पारम्परिक पोशाक का चलन बहुत कम होने लगा है। बाजार में नई पोशाक के आने से पारम्परिक पोशाक का चयन हुआ है। इसके बावजूद जनजाति समुदाय ने अपनी पारम्परिक पोशाक को नये लूक में प्रस्तुत किये जाने से किसी न किसी रूप से फैशन के रूप में आम व्यक्ति द्वारा विशेष अवसरो पर उपयोग किया जाने लगा है। जो जनजातीय पोशाक को आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में शामिल होना परिलक्षित प्रतीत होता है। काई वर्ग परीक्षण से परिणामों में सार्थकता पाई गई अर्थात जनजातीय पोशाक का उपयोग विशेष अवसरों एवं समारोह के दौरान किया जाता है जो आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत किया जाता है।

जनजातीय समुदाय की अपनी प्राचीन परम्परा तथा रीति–रिवाज सतत रूप से अपनाया जाता रहा है जो जनजातीय समुदाय की पहचान है। चूँकि जनजातीय समुदाय का एक वर्ग जो रोजगार एवं जीविका के चलते वर्षो से अपनी परम्परा से दूर रहे हैं

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

इसके बावजूद समय–समय पर अवसर आने पर तीज त्यौहार मनाया जाता है। जिसके लिए परिवार के सदस्य शामिल होते हैं। जिसकी विवेचना तालिका क्रमांक 4.41 में स्पष्ट किया गया है –

तालिका क्रमांक 2

पारम्परिक समारोह में शामिल होने की स्थिति

स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
शामिल होते हैं	164	54.67
शामिल नहीं करते हैं	136	45.33
कुल	300	100.00

स्रोत –प्राथमिक समंक $df = 1$ का 5 प्रतिशत स्तर पर

$\chi^2 = 3.84 < 0.88$ सार्थकता का अभाव

अतः परिणामों में स्वतंत्रता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पारम्परिक समारोह में शामिल होने की दृष्टि से 54.67 प्रतिशत उत्तरदाता के अनुसार पारम्परिक समारोह में शामिल होते हैं तथा 45.33 प्रतिशत के अनुसार पारम्परिक समारोह में शामिल नहीं होते हैं।

अध्ययन में पाया गया है कि सामान्यः यह देखा गया है कि जनजातीय समुदाय समय–समय पर रीति–रिवाज के अनुसार मनाये जाने वाले तीज त्यौहारों पर परिवार के सदस्य शामिल होते हैं और यह नीयत परम्परा मानी गई है जिसमें उत्साहपूर्वक सदस्य भाग लेते हैं। काई वर्ग परीक्षण से परिणामों में सार्थकता का अभाव पाया गया है अर्थात् पारम्परिक समारोह में शामिल होना अनिवार्य तो नहीं है परन्तु परम्परागत तरीके से मनाया जाने वाला अनुष्ठान होता है जिसमें प्रत्येक सदस्य की भागीदारी होती है। परन्तु कई सदस्यों की स्थिति रोजगार और जीविका के कारण उपस्थित नहीं हो पाते हैं। यह स्थिति आवश्यकता एवं इच्छाओं पर निर्भर करती है।

इस प्रकार जनजातीय पोशाकों का आधुनिकीकरण के रूप में बढावा मिलने के अलग–अलग पक्ष रहे है। जिसमें पहनावे के तरीके, पारम्परिक एवं बहुरंगी डिजाईन तथा पोशाक की बनावट काफी आकर्षक लगती है जो सामान्यतः सभी को आकर्षित करती है। जनजातीय पोशाक का सहसंबंधात्मक गुणांक का विश्लेषण तालिका क्रमांक 4.42 में स्पष्ट किया गया है –

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

तलिका क्रमांक 3

जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने का सहसबंधत्मक की स्थिति

स्थिति	फैशनेबल पोशाक		पारम्परिक पोशाक	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
पहनावे में	98 / 103	95.15	153 / 197	77.66
डिजाईन	82 / 103	79.61	144 / 197	73.09
बहुरंगीय	89 / 103	86.41	159 / 197	80.71
बनावट	93 / 103	90.29	171 / 197	86.80
औसत	91 / 103	87.86	157 / 197	79.57

स्रोत– प्राथमिक समंक सहसंबंध गुणांक +0.49

स्तर : 0.25 से + 0.75

परिणामः धनात्मक मध्यम

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढावा मिलने की दृष्टि से फैशनेबल पोशाक में 95. 15 प्रतिशत के आुनसार पहनावे के तरीके के कारण, 79.61 प्रतिशत के अनुसार डिजाईन के कारण, 86.41 प्रतिशत के अनुसर बहुरंगी पोशाक के कारण तथा 90.29 प्रतिशत के अनुसार विशेष बनावट के कारण फैशन के रूप में स्वीकार किया जाता है। जबकि औसतन 87.86 प्रतिशत के अनुसार पोशाक सभी पहलुओं के कारण स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार पारम्परिक पोशाक में 77.66 प्रतिशत के अनुसार पहनावे के तरीके 73.09 प्रतिशत के अनुसार डिजाइन के कारण 81.71 प्रतिशत के अनुसार बहुरंगी पोशाक के कारण तथा 86.80 प्रतिशत के अनुसार पोशाक के विशेष बनावट के कारण इत्यादि के आधार पर पारम्परिक पोशाक के रूप में जनजातीय पोशाक को पारम्परिक पोशाक के साथ जोड़ा जाता है। जबकि औसतन 79.57 प्रतिशत के अनुसार उक्त सभी आधार पर जनजातीय पोशाक को पारम्परिक पोशाक के रूप में शामिल किया जाता है।

अध्ययन में पाया गया है कि जनजातीय पोशाक का फैशनेबल एवं पारम्परिक पोशाक के लूक को देखा जाता है। विशेष रूप से शादी–विवाह एवं त्यौहारो के अवसरो पर पोशाक के निरंतर चलन पर इसका प्रभाव देखा जाता है। फैशन को नये लूक में परिवर्तन के लिये जनजाति पोशाक को शामिलकर लिया जाता है। जिसे कई व्यक्ति अधिक पसंद करने लगते है। चूँकि पारम्परिक पोशाक में जनजाति लूक देखने को मिलती है इसके बावजूद पहनावे को आकर्षक बनाने के लिये बहुरंगी बना दिया जाता है। क्षेत्रीय एवं समुदाय में पहनावे के अलग–अलग तरीके होते है परन्तु सामान्य पहनावे के लिये जनजातीय लूक को भी पसंद किया जाता है। सहसंबंधत्मक गुणांक परीक्षण की दृष्टि से परिणामों में मध्य स्तरीय धनात्मक सहसंबंध गुणांक (+) 0.49

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

प्राप्त हुआ है जो +0.25 से +0.75 के मध्य प्राप्त हुआ है। जिससे स्पष्ट है कि फैशनेबल पोशाक एवं पारम्परिक पोशाक में सामान्य परिवर्तन होता है। अर्थात जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने की सामान्य स्थिति निर्मित करता हैं।

रेखाचित्र क्रमांक 2

जनजातीय पोशाक का आधुनिकीकरण में बढ़ावा मिलने का सहसबंधत्मक की स्थिति

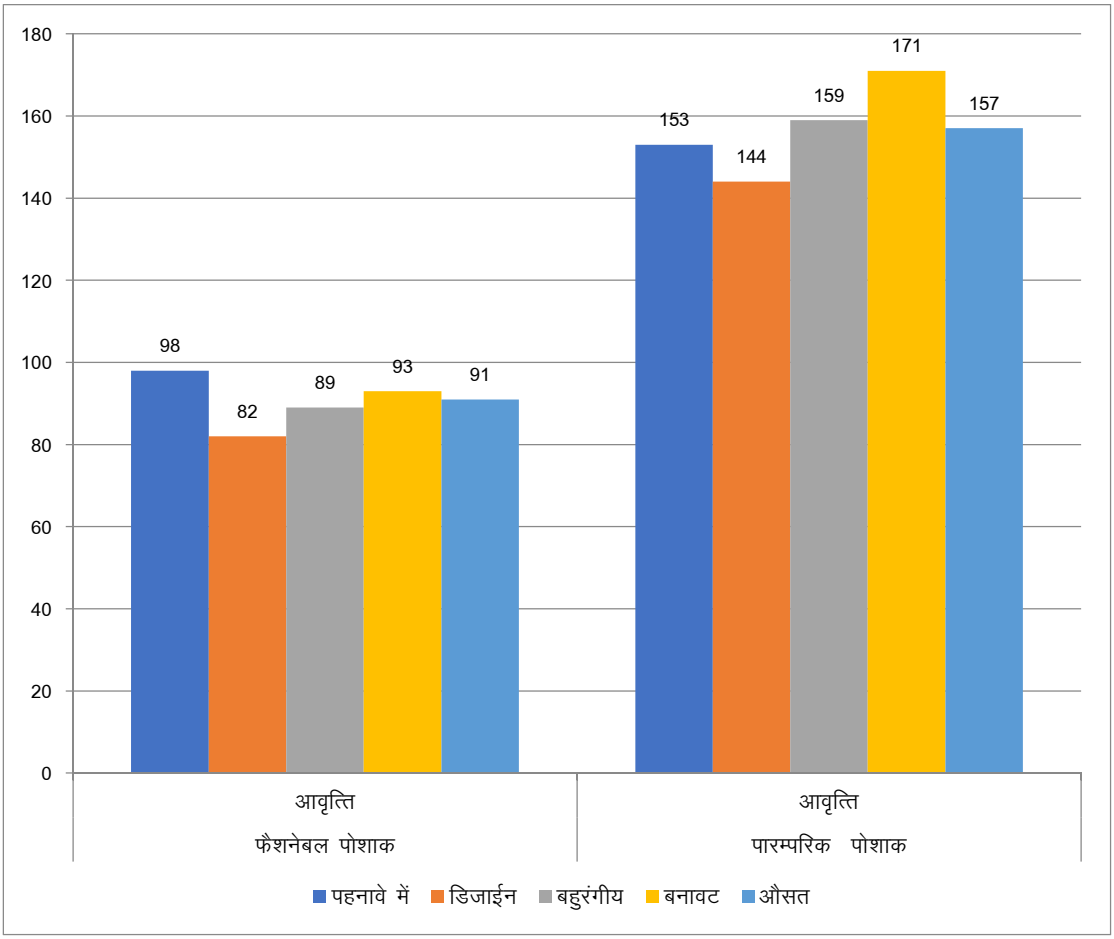

4. निष्कर्ष :

फैशन का विस्तार एवं विकास करने में पहचान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है पहचान के माध्यम से प्रक्षेपित संदेशों की उम्र कम होती है संदेश की भाषा फैशन पर नहीं निहित दृष्टिकोण पर बल देती है इसका प्रचार अभियान गतिविधियों से जुड़ा होता है

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

पहचान के द्वारा परिवेश एवं तौर तरीके का पुनर नवीनीकरण होता रहा है इसमें इस्तेमाल होने वाली प्रचार की भाषा ब्रांड को लोकप्रिय बनती है जिसमें आम प्रस्ताव सुझाव जाते है

जनजातीय समुदाय का जीवन मुख्य रूप से नवीन परिवेश रहा है जिसके कारण समाज की मुख्य गतिविधियों से अनभिज्ञ रहे हैं परंतु शासन की नीतियों एवं योजनाओं के कारण मुख्य धारा में शामिल होने का अवसर मिला है जिसके चलते जनजाति समुदाय में परिवर्तन देखा गया है वर्तमान में प्रत्येक पारंपरिक गतिविधियों का आधुनिक सामाजिक गतिविधि के रूप में परिलक्षित हुआ है विशेष कर शैक्षिक प्रचार प्रसार के प्रभाव से जनजाति समुदाय को अधिक लाभ प्राप्त हुआ

कुछ विशेष अवसर या समारोह के दौरान जनजातीय पोशाक का आंशिक चलन के रूप में देखा जाता है फैशनेबल पोशाक के बदलते स्वरूप में भी क्षेत्रीय पोशाक को शामिल किया जाता है जिसके चलते जनजातीय पोशाक को फैशन एवं जीवन शैली के रूप में शामिल कर लिया जाता है।